आज की मुरली का सार --

बाबा ने कहा, जो बच्चे रचता और रचना के ज्ञान को एक्युरेंट समझते हैं, वही सतोप्रधान बुद्धि हैं. हम अपने में चेक करें की हम रचता और रचना के ज्ञान को कितना एक्युरेंट समझते हैं.

बाबा को रचयिता (रचता) क्यों कहते हैं?

बाबा हम आत्माओं के रचयिता हैं. - नहीं. हम आत्माये तो अनादि हैं, अविनाशी हैं.

बाबा इस बेहद के ड्रामा का रचयिता हैं. - नहीं. ड्रामा भी अनादि हैं. इस ड्रामा में तो सुख और दुख दोनों आते हैं, जब की बाबा तो सुख-कर्ता, दुख-हर्ता हैं. हम सब जानते हैं, बाबा इस पशु-पक्षी, वनस्पति या प्रर्कुती के रचयिता भी नहीं हैं.

बाबा क्या रचते हैं? -- बाबा ने समझाया हैं की बाप भी इस सृष्टि चक्र रुपी बेहद के ड्रामा में पार्टधारी हैं. बाबा ही ड्रामा के हीरो ऐक्टर (प्रिंसिपल ऐक्टर) हैं. बाबा का पार्ट ड्रामा के अन्त में, यानी कलियुग के अन्त में ही खुलता हैं. बाबा को रचयिता इस लिए कहा जाता हैं, क्योंकि कलियुग के अन्त में, जब सब आत्मायें तमोप्रधान, दुखी, पतित बन जाती हैं, तब ज्ञानसागर बाबा आकर, कुछ गिनी-चुनी सौभाग्यशाली आत्माओं को इस सृष्टि चक्र रुपी बेहद के ड्रामा का आदी-मध्य-अन्त का सत्य ज्ञान देते हैं और पतित से पावन बनने का रास्ता बतलाते हैं. इस पढाई को हम आत्मायें नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार धारण करती हैं और नंबरवार पतित से पावन बनती हैं. सच में बाबा ने हमें ये अमूल्य ज्ञान दें कर हमारी आत्मा को जैसे की बिलकुल नया बना दिया, हमारे जीवन को ही पलटा दिया, हमारे लिए इसको नयी रचना ही कहेंगे. वाह रचनाकार बाबा वाह.

बाबा ने हमें नया तो बना दिया, लेकिन साथ में हमारे लिए नयी सतयुगी सृष्टि की रचना भी वही करते हैं. बाबा हम भाग्यशाली आत्माओं को संगम-सतयुग-त्रेता के **21** जन्मो का वर्सा देते हैं. भाग्यविधाता बाप, हम भाग्यशाली आत्माओं का **21** जन्मो का प्रालब्ध भी हमारे अभी के पुरुषार्थ के आधार पर ही लिखते हैं. बाबा ने बताया हैं की इस पढाई से हम जो चाहे पद पा सकते हैं. सतयुग-त्रेता में हम क्या पद पायेंगे इसका मदार इस पढाई पर ही हैं. अब समझ में आया की, कितना अमूल्य संगम का समय हैं. हमें एक क्षण भी व्यर्थ गवानी नहीं हैं, जितना भी समय हैं बाबा की याद में रह कर आत्मा को संपूर्ण पवित्र (पावन) बनाना हैं और देवी-गुण अपने में धारण करने हैं.

बाबा अभी तिन रोल बजाते हैं, बाप-टीचर-सतगुरु. बाप के रुप में, हम भाग्यशाली आत्माओं की पालना करते हैं, टीचर के रुप में पढ़ाते हैं और सतगुरु के रुप में, वरदानों से हमारी झोली भरते हैं और अन्त में सब आत्माओं को मुक्ति में ले जाते हैं और हम को जीवन-मुक्ति (सतयुग) में भेज देते हैं.

शुक्रिया बाबा तेरा लाख-लाख शुक्रिया. ॐ शांति.